पाठ 17 अध्याय 11 जारी 3

पिछले सप्ताह हमने लैव्यव्यवस्था अध्याय 11 के उस भाग को समाप्त किया जिसमें उन जानवरों के विषय पर चर्चा की गई थी जिन्हें ईश्वर द्वारा भोजन के लिए शुद्ध और अशुद्ध घोषित किया गया था। इसके अलावा हमने इस बात पर भी चर्चा की कि यह निर्धारित करने की कोशिश करना निरर्थक है कि क्यों कुछ जानवरों को शुद्ध और अन्य को अशुद्ध के रूप में अलग रखा गया है, और यह कि हमारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि हम प्रभु के चयन को उनकी संप्रभु इच्छा के कार्य के रूप में स्वीकार करें।

अध्याय 11 की विषय–वस्तु और इब्रानी आहार नियमों पर इसके ध्यान के कारण, इसने अनुष्ठान स्वच्छता और पवित्रता के महत्वपूर्ण विषय को खोल दिया है। हम आज उस अन्वेषण को जारी रखने जा रहे हैं क्योंकि यह परमेश्वर की अपनी सृष्टि के लिए योजना में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसके अलावा हमें वास्तव में इस पर पकड़ बनाने की आवश्यकता है ताकि हम नए नियम में शुद्धता के बारे में कथनों को समझ सके जैसा कि इसे समझा जाना चाहिए।

हमने अशुद्धता के कई पहलुओं पर चर्चा की है, लेकिन अब मैं संक्षेप में इस प्रश्न का उत्तर देना चाहूँगा क्या अशुद्धता और पाप एक ही चीज है? एक शब्द में, नहीं, लेकिन अशुद्धता पाप का परिणाम हो सकती है, फिर भी हमेशा ऐसा नहीं होता। जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था के अगले अध्यायों में देखेंगे, अशुद्धता एक महिला में उसके मासिक धर्म चक्र और बच्चे के जन्म के दौरान उत्पन्न होती है। निश्चित रूप से इसमें कुछ भी **पाप** नहीं है। अशुद्धता त्वचा रोग (अक्सर, गलत तरीके से, हमारे बाइबल में कुष्ठ रोग कहा जाता है) के संक्रमण से उत्पन्न होती है। निश्चित रूप से इसमें कुछ भी पाप नहीं है, फिर भी आम तौर पर शास्त्र हमें बताते हैं कि त्वचा रोग पाप की एक छिपी और आतरिक स्थिति का एक बाहरी संकेत है। मैं इस बात को छोड़ना चाहूँगा कि अशुद्धता पाप से कैसे संबंधित है, लैव्यव्यवस्था के कुछ और अध्यायों के बाद। अभी के लिए, बस यह समझकर आगे बढ़े कि पाप और अशुद्धता एक ही चीज़ के लिए दो शब्द **नहीं** हैं। अपने मन में पाप और अशुद्धता को समान न समझें। महत्वपूर्ण बात यह है कि यहोवा की पवित्रता अवश्य सुरक्षित रहेगी और सभी अशुद्धता से अलग रहेगी।

आज मैं उस मामले पर बात करना शुरू करना चाहूँगा जिसका मुझे यकीन है कि आप में से ज़्यादातर लोग इंतज़ार कर रहे होंगे क्या कोषेर खाने के नियम अभी भी लागू होते हैं? और, अगर वे लागू होते हैं, तो वे किस पर लागू होते हैं? क्या धर्मशास्त्रीय आहार नियम गैर यहूदी ईसाई विश्वासियों, या मसीहाई यहूदियों, या किसी और पर लागू होते हैं?

तोरह क्लास में हम जो कुछ भी करते हैं, उसी तरह हम इसे सरल "हाँ" या "नहीं" तरीके से नहीं देखेंगे क्योंकि (जैसा कि मुझे उम्मीद है कि आप देखना शुरू कर रहे हैं) ईश्वर–सिद्धांतों के लिए यह मूल दृ ष्टिकोण ग्रीक सोच है, और यह बाइबल की डिजाइन और विचार–शैली के बिल्कुल विपरीत है। सत्य उन

पैटर्न में पाया जाता है जो उत्पत्ति से शुरू होकर प्रकाशितवाक्य तक निर्धारित किए गए हैं। सत्य एक या दो पदों में **नहीं** पाया जाता है, जिनसे हमें उम्मीद है कि वे स्पष्ट रूप से बताएँगे कि हम क्या खोज रहे हैं, और हमें इसके पीछे एक संक्षिप्त तर्क देंगे।

मैं कहूँगा कि आधुनिक चर्च के भीतर इस बात पर लगभग सर्वसम्मति है कि, कई कारणों से तोरह के कोषेर खाने के नियम लागू नहीं होते हैं। इसके लिए आमतौर पर उद्धृत प्राथमिक कारण यह विश्वास है कि मसीह ने तोरह के नियम को समाप्त कर दिया था, जिसका मुख्य भाग आहार नियम हैं। इसलिए जो कुछ भी यीशु के जन्म से पहले परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया था, हम बस अपना हाथ हिला सकते हैं और उनके आगमन से पहले के सभी शास्त्रों को गायब कर सकते हैं। हमें उस क्षेत्र पर फिर से जाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने यहाँ तोरह क्लास में बार–बार प्रदर्शित किया है कि मसीह ने, मत्ती 5:17–20 में, पर्वत पर उपदेश में, व्यक्तिगत रूप से कहा कि वह नियम को समाप्त करने नहीं आया था, और जो कोई भी यह सिखाता है कि उसने ऐसा किया है, उसे स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहा जाएगा। इसके बजाय जो कोई भी नियम सिखाता है और उसका पालन करता है, उसे स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कहा जाएगा।

चूँकि यह एक विवादास्पद मामला है, इसलिए हम आज और अगले सप्ताह भी इसकी जाँच करेंगे। लेकिन कोषेर खाने के इस लंबे विषय को किसी निष्कर्ष पर पहुँचाने के लिए, और किसी ऐसे दिशानिर्देश के साथ समाप्त करने के लिए जिसे हम अपने जीवन में काम करना शुरू कर सकें, मैं असामान्य दृष्टिकोण (कम से कम मेरे लिए असामान्य) अपनाने जा रहा हूँ, जिसमें मैं आपको अपना निष्कर्ष पहले ही बता दूँगा और फिर आपको दिखाऊँगा कि मैं उस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचा। फिर भी पूरी ईमानदारी से मुझे संत पौलुस के शब्दों का हवाला देकर इसकी प्रस्तावना करनी चाहिए, जब वे विवाह और तलाक के कटिदार विषय पर कोरिंथियन विश्वासियों को शिक्षा दे रहे थेः संत पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7 में यह कहाः "मैं जो कुछ भी तुम्हें बताने जा रहा हूँ, उसके बारे में मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि यह वही है जो **मैं सोचता हूँ;** और मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है कि यह प्रभु की ओर से है। इसलिए इसे उसी रूप में लें जैसा कि यह है। तो, इस समझ के साथ, हम यहाँ आते हैं।

मैं **पूरी तरह से** आश्वस्त हूँ कि मसीह ने तोरह को समाप्त नहीं किया। जैसा कि उन्होंने कहा, "एक भी अक्षर या स्ट्रोक नहीं, और इसलिए यह समझ से परे है कि वह बलिदान प्रणाली और आहार संबंधी नियमों को समाप्त कर सकता था जो बलिदान प्रणाली का अभिन्न अंग थे, और तोरह नामक पवित्र निर्देश के पूरे ढाँचे के लिए केंद्रीय थे। फिर भी, निर्विवाद रूप से, कुछ बदल गया है, तोरह के संचालन में एक बड़ा परिवर्तन उनकी मृत्यु, पुनरुत्थान और पवित्र आत्मा के आगमन पर हुआ। और तोरह के अधिकांश नियम लागू नहीं है क्योंकि उनमें से बहुत से नियम एक भौतिक मंदिर और एक भौतिक पुजारी के अस्तित्व पर निर्भर हैं जो वर्तमान में मौजूद नहीं हैं (लेकिन वे निकट भविष्य में होंगे)।

बलिदान प्रणाली के संबंध में, सबसे बड़ा परिवर्तन यह था कि यीशु ने उस प्रणाली की हर आवश्यकता को अपने कँधों पर ले लिया उच्च पुरोहिती, अनुष्ठान और यहाँ तक कि बलिदान भी। लेकिन कोई गलती न करें: तोरह की बलिदान प्रणाली की भावना और उद्देश्य जीवित और अच्छी तरह से है क्योंकि मसीह के निर्दोष और शुद्धतम रक्त की आवश्यकता अभी भी हर दिन हर पल हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए होती है, ठीक वैसे ही जैसे उनके आने से पहले किए गए प्रत्येक पाप के प्रायश्चित के लिए एक निर्दोष जानवर के रक्त की आवश्यकता होती थी। तोरह के नियुक्त पुरोहिती की भावना और उद्देश्य भी अभी भी जीवित और अच्छी तरह से है क्योंकि यीशु अब उच्च पुजारी की भूमिका निभाते हैं, और स्वर्ग में हमारे स्थायी मध्यस्थ हैं, ठीक वैसे ही जैसे हारून के वंशज मानव उच्च पुजारी और इस्राएल के लिए मध्यस्थ हुआ करते थे। और हम (उनके अनुयायी के रूप में) अब आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, सामान्य पुजारी हैं। यीशु में विश्वास के द्वारा हम यहोवा की सेवा के लिए अलग किए गए, पवित्र किए गए, पवित्र घोषित किए गए हैं, ठीक वैसे ही जैसे अतीत में लैव्यव्यवस्था के गोत्र के भीतर कुछ निश्चित परिवारों को पवित्र किया गया था और बलि के अनुष्ठानों को संपन्न करने तथा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की विभिन्न तरीकों से सेवा करने के लिए अलग किया गया था।

तोरह, जो एक दिव्य आदर्श है जो **पूरी तरह से** स्वर्गीय और आध्यात्मिक रूप में शुरू हुआ (शुरुआत में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था) अंततः शासन और अनुष्ठान की एक सांसारिक और भौतिक प्रणाली बन गई जब यहोवा ने इसे माउंट सिनाई पर मूसा और इस्राएल को दिया। और फिर 1300 साल बाद क्रॉस के पैर पर, शासन और अनुष्ठान की उस प्रणाली ने अपने मूल स्वर्गीय और आध्यात्मिक स्वरूप के और अधिक पहलुओं को ग्रहण किया। बलिदान की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं हुई है क्योंकि जब तक पाप मौजूद है, बलिदान का प्रायश्चित अवश्य ही होना चाहिए, लेकिन अब केवल यीशु का बलिदान रक्त ही प्रायश्चित करने में सक्षम है। पुरोहिताई की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं हुई है क्योंकि परमेश्वर ने हमेशा अपनी इच्छा को पूरा करने और उसकी सेवा करने के लिए अलग–अलग प्राणियों की स्थापना की है, चाहे वे स्वर्गदूत हों या मनुष्य। लेकिन हमारे युग के लिए अलग–अलग और पवित्र मनुष्य, पुरोहिताई, विश्वासी हैं। और जहाँ तक आहार नियमों, कश्रुत का सवाल है, ऐसे खाद्य पदार्थ और अन्य चीजें हैं, जो अभी भी हमारे लिए शुद्ध और अशुद्ध हैं, तथापि, वह भी रूपान्तरित हो गया है और अब उसे विशुद्ध भौतिक, सांसारिक अनुष्ठानिक अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए जैसा कि वह एक समय में था: अब वह (कम से कम आशिक रूप से) अपने आध्यात्मिक और स्वर्गीय आदर्श की ओर लौट आया है।

परिवर्तन में एक और गतिशीलता शामिल है क्योंकि मनुष्य भौतिक और आध्यात्मिक का एक अजीब संयोजन है एकमात्र जीवित प्राणी जो ऐसा है, तोरह के आदर्शों और सिद्धांतों की अभिव्यक्ति अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक और भौतिक, अदृश्य और दृश्य का एक संयोजन है। और क्योंकि ब्रह्मांड की वर्तमान स्थिति में, स्वच्छ और अशुद्ध, पाप से भ्रष्ट भौतिक और पूरी तरह से पवित्र आध्यात्मिक, एक साथ रहते हैं, तोरह में अभी भी एक भौतिक, सांसारिक प्रकृति है जो इसकी आध्यात्मिक प्रकृति के साथ है। मैंने इस रहस्य को कई अवसरों

पर "द्वैत की वास्तविकता" शब्द का उपयोग करके समझाया है। वह यह है कि हम इस तरह के समानांतर ब्रह्मांड में रहते हैं जहाँ आध्यात्मिक और भौतिक एक साथ मौजूद हैं, यह एक या दूसरे का मामला नहीं है जैसा कि ग्रीक विचार में होना चाहिए। द्वैत की वास्तविकता की घटना वैज्ञानिक शब्दों में व्याख्या योग्य नहीं है, यह केवल विश्वास और पैटर्न में व्याख्या योग्य है, पैटर्न जो यहोवा के दिमाग से आए हैं, मनुष्यों के दिमाग से नहीं।

तो संक्षेप में कहें तो हालाँकि आहार संबंधी नियम समाप्त **नहीं** किए गए हैं, फिर भी यीशु ने जो किया उसके परिणामस्वरूप कुछ अलग है। और कम से कम उस "कुछ" का एक हिस्सा जो उसने किया वह यह है कि **जब मोक्ष की बात आती है** तो उस पर भरोसा भौतिक, सांसारिक अनुष्ठानों के प्रति बिना सोचे–समझे कानूनी आज्ञाकारिता से बेहतर है। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ: मोक्ष प्राप्त करने के मामले में आस्था आज्ञाकारिता पर हावी हो जाती है। फिर भी, इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि तोरह के प्रति आज्ञाकारिता जो कि ईश्वर का मन है, अब अप्रचलित हो गई है। हमारा उद्धार 100 प्रतिशत इस भरोसे पर निर्भर है कि मसीह का हमारे लिए किया गया कार्य ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो हमें यहोवा के लिए स्वीकार्य बनाती है और उसके साथ शांति से रहने में मदद करती है। फिर भी... और यहीं पर चर्च पूरी तरह से विफल हो गया है, प्रभु के तोरह के प्रति आज्ञाकारिता अभी भी मायने रखती है। वास्तव में, हमारे उद्धार का **परिणाम** आज्ञाकारिता होना चाहिए और यही अपेक्षित है। अगर हम सोचते हैं कि उसके शाश्वत तोरह के प्रति आज्ञाकारिता अब पुरानी हो चुकी है, तो यहोवा के प्रति हमारी कृतज्ञता कहाँ है? अगर हम केवल अपने प्रति आज्ञाकारी हैं, तो वह हमारा प्रभु और स्वामी कैसे है? यह सच है (परमेश्वर का शुक्र है) कि तोरह द्वारा घोषित निंदा, अभिश्राप (जो कि ईश्वर से अनंत अलगाव है) अब **उन लोगों के लिए** मर चुका है **जो मसीह पर भरोसा करते हैं।** लेकिन कभी संदेह न करें कि वही निंदा उन लोगों के लिए जीवित और अच्छी है जो भरोसा नहीं करते हैं। साथ ही कभी संदेह न करें (और यह सभी प्रेरितों द्वारा स्पष्ट किया गया है) कि जो लोग मसीह में हैं और जो तोरह का पालन करते हैं, **आशीर्वाद** बना रहता है। क्या मैं यह कह रहा हूँ कि जो लोग तोरह का पालन करने का निश्चय करते हैं, उन्हें ऊपर से **आशीर्वाद** मिलेगा, जबकि जो लोग वास्तव में बचाए गए हैं, लेकिन पालन नहीं करते, उन्हें नहीं मिलेगा? निश्चित रूप से मैं ऐसा कह रहा हूँ। क्या आहार नियमों का पालन करने से आशीर्वाद मिलता है? इसमें कोई संदेह नहीं है, क्योंकि यह तोरह का हिस्सा है। आह, लेकिन क्या हमारे उद्धार को प्राप्त करने या **बनाए रखने के लिए** कोषेर खाने के नियमों का पालन करना आवश्यक है? **बिल्कुल नहीं** दूसरी ओर क्या मसीह पर भरोसा किए बिना आहार नियमों का पालन करना किसी काम का है? इसका उत्तर भी है, नहीं। परमेश्वर पर भरोसा किए बिना तोरह का पालन करना बेकार है। अनंत जीवन के अपने निजी लाभ के अलावा उद्धार का क्या फायदा है, सिवाय उस व्यक्ति की आज्ञाकारिता के जिसने आपको बचाया है?

मसीह और तोरह एक साथ, अविभाज्य रूप से विद्यमान हैं। मसीह ही वचन है। वचन ही तोरह है। भरोसा और आज्ञाकारिता एक साथ, अविभाज्य रूप से विद्यमान हैं। भरोसा करने से मोक्ष मिलता है, और जो लोग भरोसा करते हैं, उनके लिए आज्ञाकारिता से आशीर्वाद मिलता है।

अब मैं आपको बताता हूँ कि मैं नए नियम में कुछ स्थानों को देखकर उन निष्कर्षों पर क्यों पहुँचा हूँ जहाँ अक्सर यह सिखाया जाता है कि कोषेर खाने को समाप्त कर दिया गया था, कम से कम गैर–यहूदियों के लिए। मैं सुनने वाले सभी लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि हम जो चर्चा कर रहे हैं वह सब लैव्यव्यवस्था अध्याय 11 पर आधारित है, जो इस्राएल के लिए आहार नियमों को सामने रखता है।

अपनी बाइबल में प्रेरितों के काम 10 खोलिए। यह पतरस और रोमी सेना के अधिकारी कुरनेलियुस की प्रसिद्ध कहानी है, तथा एक दर्शन में पशुओं से भरी चादर को स्वर्ग से नीचे उतारा गया। **प्रेरितों के काम 10:9 ''अगले दिन दोपहर के समय जब वे यात्रा करते हुए नगर के निकट पहुँचे, तो पतरस प्रार्थना करने के लिये छत पर गया। 10 उसे भूख लगी और वह कुछ खाना चाहता था, और जब भोजन तैयार हो रहा था, तो वह बेसुध हो गया। 11 उसने देखा कि स्वर्ग खुल गया है और एक बड़ी चादर जैसी कोई चीज़ अपने चारों कोनों से धरती पर उतारी जा रही है। 12 उसमें हर तरह के चौपाए जानवर, धरती के रेंगनेवाले जन्तु और हवा के पक्षी थे। 13 तब एक आवाज़ ने उससे कहा, "पतरस, उठ। मार और खा। 14 पतरस ने कहा, "नहीं, प्रभु। मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध चीज़ नहीं खाई।" 15 फिर आवाज़ ने उससे दूसरी बार कहा, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अपवित्र मत कह।" 16 ऐसा तीन बार हुआ और तुरंत चादर स्वर्ग में वापस ले जाई गई। 17 <u>जब पतरस इस दर्शन के अर्थ के बारे में सोच रहा था, तो कुरनेलियुस के भेजे हुए लोगों ने पता लगाया कि शमौन का घर कहाँ है और वे द्वार पर रुके।</u> 18 उन्होंने पुकार कर पूछा कि क्या शमौन जो पतरस कहलाता था, यहाँ रह रहा है?"**

और, यहीं पर कहानी आमतौर पर किसी धर्मोपदेश या शिक्षा के दौरान रुक जाती है, और कोई शिक्षक या पादरी कहता है, 'इससे ज़्यादा स्पष्ट क्या हो सकता है। परमेश्वर पतरस को एक दर्शन में कई जानवर भेजते हैं, सभी खातों के अनुसार ये अशुद्ध निषिद्ध जानवर थे, और उसे बताते हैं कि उन्हें मारना और खाना ठीक है। इसलिए यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने उन पर से अशुद्ध लेबल हटा दिया है और यह कोषेर खाने का अंत है।

खैर इतनी जल्दी नहीं पहली बात जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि पद 17 तक, पतरस इस बात पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाया था कि इस दर्शन का क्या मतलब है; वह इससे भ्रमित था और उसे सोचना पड़ा कि परमेश्वर उससे क्या कह रहा था। कई पदों के बाद, पद 34 में, पतरस समझाता है कि जब उसने पहले सोचा कि यह कोबेर खाने के बारे में था, तो उसे अब समझ में आता है कि ऐसा नहीं था जब वह कहता है **प्रेरितों 10:34 "तब पतरस ने बोलना शुरू किया: "अब मुझे एहसास हुआ कि यह कितना**

सच है कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता 35 बल्कि हर राष्ट्र के लोगों को स्वीकार करता है जो उससे डरते हैं और जो सही काम करते हैं।"

पतरस कहते हैं कि यह दर्शन हर राष्ट्र (गैर–यहूदियों) से उन **लोगों** को स्वीकार करने के बारे में था जो ईश्वर पर भरोसा करते थे। कोई भी व्यक्ति, चाहे उसका वंश कुछ भी हो, यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार के लिए पात्र होना चाहिए; जैसा कि पतरस कहते हैं, "कोई पक्षपात नहीं"। इसलिए प्रेरित के अनुसार जिन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक का वास्तविक शास्त्र लिखा था, हम इस कहानी को स्वच्छ और अशुद्ध जानवरों के कोषेर कानूनों को खत्म करने के लिए नया नियम निर्देश के उदाहरण के रूप में पेश कर सकते हैं। जैसा कि पतरस ने अंततः समझा और कहा कि इस दर्शन का भोजन से कोई लेना–देना नहीं था, बल्कि इसका संबंध मनुष्यों से था। भोजन का उपयोग मनुष्य का प्रतिनिधित्व करने वाले रूपक के रूप में किया गया था क्योंकि पतरस उस भोजन के बारे में सपने देखते हुए सो गया था जो उसके लिए तैयार किया जा रहा थाः पतरस भूखा था। अशुद्ध जानवर केवल अशुद्धता के आध्यात्मिक सिद्धांत और अन्यजातियों की स्थिति का एक बहुत ही परिचित और अच्छी तरह से समझा जाने वाला यहूदी **प्रतीक** था। इसका संबंध यहूदियों द्वारा अन्यजातियों से दूर रहने से था (इस मामले में यह पतरस की अन्यजाति कुरनेलियुस को खुशखबरी लाने की अनिच्छा थी) क्योंकि यहूदी सभी अन्यजातियों को अशुद्ध मानते थे; या जैसा कि यहोवा ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहा, "जो मैं तुम्हें शुद्ध बताता हूँ उसे अशुद्ध मत कहो"।

लेकिन, चलिए इसे एक और कदम आगे बढ़ाते हैं, वास्तव में यहाँ किसको स्वच्छ कहा जा रहा है, जो पहले अशुद्ध था? गैर–यहूदी **विश्वासी** अब तक केवल वही व्यक्ति जो शारीरिक रूप से इस्राएल में शामिल हुआ था, एक विदेशी, एक गैर–यहूदी जिसने अपनी पूर्व निष्ठाओं को त्याग दिया और आधिकारिक रूप से यहूदी बन गया उसे यहूदी लोगों द्वारा शुद्ध माना जाता था। लेकिन, अब, किसी रहस्यमयी दिव्य तरीके से, कुछ गैर–यहूदी लोग इस्राएल में **शामिल** हो गए हैं, और इसलिए ईश्वर के साथ इस्राएल की वाचाओं में शामिल हो गए हैं, बिना शारीरिक और आधिकारिक रूप से इस्राएल में शामिल हुए।

जब हम समय को पीछे देखते हैं तो हम पाते हैं कि यहाँ रहस्य यह नहीं है कि गैर–यहूदियों को इस्राएल में शामिल होने की अनुमति दी गई थी और परिणामस्वरूप उन्हें "शिविर के अंदर" लाया गया था, यह पुरानी खबर थी जिसे यहोवा ने उसी क्षण से आदेश दिया था जब उसने अब्राहम और उसके साथ की गई वाचा के माध्यम से एक पूरी तरह से अलग लोगों का निर्माण करना शुरू किया था। यहोवा ने अब्राहम से कहा कि विदेशियों, गैर यहूदियों को इस्राएल में शामिल होने की अनुमति दी जानी चाहिए, बशर्ते कि वे झूठे देवताओं की अपनी पूजा छोड़ दें और इस्राएल के परमेश्वर के प्रति निष्ठा की घोषणा करें, और एक औपचारिक मामले के रूप में खतना करवाएँ।

बल्कि इस सबका रहस्य यह है कि **गैर–यहूदी** विश्वासियों को **शारीरिक** रूप से इस्राएल में शामिल होने की ज़रूरत **नहीं** थी, फिर भी किसी तरह वे इस्राएल और ईश्वर के साथ उनकी वाचाओं का हिस्सा बन

गए। एक यहूदी के लिए इसका मतलब था कि गैर–यहूदी विश्वासियों को खतना **नहीं** करवाना पड़ता था और उन्हें यहूदी नागरिक और धार्मिक अधिकारियों के नियंत्रण में **नहीं** आना पड़ता था। विदेशियों को भी गैर–यहूदी होने का त्याग नहीं करना पड़ता था और इसके बजाय यहूदी बनना पड़ता था। लेकिन दूसरे स्तर पर, आध्यात्मिक स्तर पर, गैर–यहूदी लोग इस्राएल का हिस्सा बन गए। और यही भ्रामक हिस्सा है। यह कैसे संभव है? यह कैसे हो सकता है? ज़्यादातर यहूदियों के लिए यह सिर्फ दोहरी बात थी, एक तरफ यहूदी, लेकिन दूसरी तरफ नहीं। संत पौलुस ने यह समझाने की पूरी कोशिश की कि यह कैसे हो सकता है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसे वह भी पूरी तरह से नहीं समझ पाया और न ही वह इसे उतनी अच्छी तरह से व्यक्त कर पाया जितना वह करना चाहता था।

अपनी बाइबल में रोमियों 2 खोलिए। यहीं पर पौलुस ने इस मुद्दे को संबोधित किया है। मैं पद 25 से पढ़ना शुरू करूँगा और उस अध्याय के अंत तक जाऊँगा। **रोमियों 2:25 क्योंकि यदि तुम तोरह के अनुसार चलो तो खतना करना लाभदायक है। लेकिन यदि तुम तोरह के विरुद्ध चलते हो तो तुम्हारा खतना खतना रहित हो गया। 26 इसलिए, यदि एक खतना रहित व्यक्ति तोरह की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, तो क्या उसका खतना रहित होना खतना के बराबर नहीं गिना जाएगा? 27 वास्तव में, वह व्यक्ति जो शारीरिक रूप से खतना रहित है लेकिन तोरह का पालन करता है, तुम पर एक दंड के रूप में खड़ा होगा, जिन्होंने ब्रिट–मिलाह प्राप्त किया है और तोरह लिखा है लेकिन उसका उल्लंघन किया है। 28 क्योंकि असली यहूदी केवल बाहरी यहूदी नहीं है, सच्चा खतना केवल बाहरी और शारीरिक नहीं है। 29 इसके विपरीत, असली यहूदी आआंतरिक रूप से एक है; और सच्चा खतना हृदय का है, आध्यात्मिक नहीं शाब्दिक, ताकि उसकी प्रशंसा अन्य लोगों की ओर से न होकर परमेश्वर की ओर से हो।**

इन आयतों के कारण मेरा दिल खुशी से चिल्ला उठता है। लेकिन, यह दर्द से भी चिल्ला उठता है क्योंकि चर्च ने इस अनमोल संदेश को कचरे के डिब्बे में फेंक दिया है। हम इस पर केवल एक मिनट ही खर्च करेंगे, हालाँकि हम एक दिन खर्च कर सकते हैं। आयत 27 को देखें: यह "उस व्यक्ति से बात कर रहा है जिसका शारीरिक रूप से खतना **नहीं** हुआ है"। वह कौन है? इस कमरे में मौजूद हर व्यक्ति को इस सवाल का जवाब पता होना चाहिए यह हम गैर–यहूदियों को संदर्भित कर रहा है जिन्हें यहूदी खतना रहित कहते हैं। अब, इन शब्दों के तुरंत बाद **''फिर भी कानून का पालन करता है"** "खतना रहित" व्यक्ति, सौम्य आस्तिक के बारे में एक योग्यता है, और वह योग्यता है और (जिसका बेहतर अनुवाद और फिर भी तोरह का पालन करता है")। हम्म! एक गैर–यहूदी... खास तौर पर एक आस्तिक क्योंकि यहाँ संदर्भ यही है एक गैर–यहूदी आस्तिक जो फिर भी तोरह का पालन करता है।

फिर पद 28 और 29 हमें यह बताता है, मसीह द्वारा लाए गए परिवर्तन के तहत एक आदमी सिर्फ इसलिए यहूदी नहीं है क्योंकि उसके पुरुष अंग से त्वचा का एक छोटा सा टुकड़ा हटा दिया गया है। नहीं;

एक आदमी को अपने दिल (अपने दिमाग) में एक आंतरिक परिवर्तन करना चाहिए, जो पवित्र आत्मा के कार्य के रूप में हो, न कि खुद का या दूसरे लोगों का।

और अगर हम संत पौलुस के कथन पर ही रुक जाते हैं तो हम यहूदियों के लिए निंदा के अलावा कुछ नहीं देखते हैं, हम यह भी सोच सकते हैं कि क्या चर्च ने वास्तव में यहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में बदल दिया है, क्योंकि अब सच्चा यहूदी, सच्चा इस्राएली, वह है जिसके अदर पवित्र आत्मा है, यीशु में विश्वास करने वाला। जो यहूदी मसीहा यीशु को स्वीकार नहीं करते हैं, उन्हें बाहर रखा गया है। लेकिन जैसा कि मैंने आपको कई बार चेतावनी दी है, अध्याय और पद चिह्नों पर ज्यादा ध्यान न दें, इन्हें विद्वानों द्वारा अध्ययन की सुविधा के लिए शास्त्रों के लिखे जाने के बहुत बाद में जोड़ा गया था। इसलिए हम पाते हैं कि संत पौलुस द्वारा यह चर्चा अध्याय 3 में भी जारी है। और, संत पौलुस, एक प्रशिक्षित रब्बी होने के नाते, स्ट्रॉ मैन को स्थापित करता है, यानी वह तर्क का अनुमान लगाता है और इसलिए बयानबाजी से वह सवाल पूछता है जो एक उचित व्यक्ति पूछेगा, और फिर उसका उत्तर देने के लिए आगे बढ़ता है।

रोमियों 3 को देखें, रोमियों 3:1 तो फिर यहूदी को क्या लाभ है? खतना करवाने का क्या महत्व है? 2 हर तरह से बहुत कुछ! सबसे पहले, यहूदियों को परमेश्वर के वचन सौंपे गए थे। 3 अगर उनमें से कुछ विश्वासघाती थे, तो क्या हुआ? क्या उनकी अविश्वासयोग्यता परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को रद्द कर देती है? 4 परमेश्वर न करे। परमेश्वर सच्चा होगा भले ही हर कोई झूठा हो। जैसा कि तनख कहता है, "ताकि आप, परमेश्वर, अपने शब्दों में सही साबित हो सकें और जब आप पर मुकदमा चलाया जाए तो फैसला जीत सकें।"

अब हम रोमियों के एक और अध्याय को देखने जा रहे हैं जो इसे और भी गहराई से बताता है। लेकिन, वहाँ जाने से पहले, मैं एक और महत्वपूर्ण गतिशीलता की ओर इशारा करता हूँ जिसे प्रकाश में लाया जा रहा है, और वह यह है सच्चा **इस्राएल या परमेश्वर का इस्राएल** जिसके बारे में संत पौलुस ने गलातियों 6 में बात की है, वह एक आध्यात्मिक अवधारणा है या इससे भी बेहतर, आध्यात्मिक और स्वर्गीय वास्तविकता। सांसारिक इस्राएल जिसमें मनुष्य, और तंबू, और जानवर, और एक तम्बू, और अनुष्ठान और समारोह शामिल हैं, वह सच्चे आध्यात्मिक आदर्श इस्राएल की अपूर्ण भौतिक छाया है। संत पौलुस समझा रहा है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उसके बेटे, यीशुआ को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, वे इस्राएलियों के **आध्यात्मिक** आदर्श को व्यक्त कर रहे हैं। और पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि सच्चे इस्राएल के आध्यात्मिक आदर्श को स्वीकार करने वाले सबसे पहले लोग, स्वाभाविक रूप से, इस्राएली थे (हजारों इब्रानियों ने इस वास्तविकता को स्वीकार किया लेकिन अधिकांश ने नहीं)। लेकिन और यहाँ बड़ा सवाल है, क्या इसका मतलब यह है कि भौतिक इस्राएल, और इसलिए भौतिक इस्राएली (यहूदी) अब मौजूद नहीं हैं या अब यहोवा के विशेष रूप से चुने हुए लोग नहीं हैं? क्या इसका मतलब यह है कि यीशु मसीह के आगमन के साथ आध्यात्मिक ने क्या अब इस्राएल के आदर्श ने भौतिक इस्राएल और भौतिक इस्राएलियों की

जगह ले ली है? क्या भौतिक इस्राएल और बाकी सभी के बीच का अंतर जिसे परमेश्वर ने पहले अब्राहम, फिर इसहाक, फिर याकूब और फिर उसके बेटों और उत्तराधिकारियों के साथ स्थापित किया था, खत्म हो गया है? या क्या एक गैर–यहूदी रहस्यमय तरीके से एक माँस और रक्त के भौतिक यहूदी में बदल जाता है। जैसे एक कैटरपिलर एक तितली में बदल जाता है, एक बार जब वह मसीह को स्वीकार कर लेता है? इन सभी सवालों का जबाब एक जोरदार और स्पष्ट नहीं है। रोमियों 3 की पहली कुछ आयतों में संत पौलुस कहते हैं कि यहूदी और गैर–यहूदी के बीच भौतिक अंतर बना हुआ है। भौतिक यहूदी हैं और भौतिक गैर–यहूदी हैं, और यह ऐसा ही रहेगा। एक भौतिक यहूदी होने के अपने फायदे हैं जिनमें से एक है माउंट सिनाई पर उन्हें दिए गए परमेश्वर के वचन को बनाए रखना और उसकी रक्षा करना। इसलिए एक गैर–यहूदी का सच्चा यहूदी बनना एक आध्यात्मिक मामला है, जो एक वास्तविक, जीवित, आध्यात्मिक वास्तविकता को व्यक्त करता है। लेकिन भौतिक यहूदियों को भी इसका हिस्सा बनने के लिए सच्चे आध्यात्मिक इस्राएल की वास्तविकता को स्वीकार करना होगा और ऐसा होने का एकमात्र तरीका वही है जो गैर–यहूदियों के लिए होता है, यीशु पर भरोसा रखें। जो यहूदी इस आध्यात्मिक वास्तविकता को स्वीकार नहीं करते हैं, वे शारीरिक यहूदी बने रहते हैं और भौतिक, सांसारिक, इस्राएल का हिस्सा बने रहते हैं। लेकिन वे सच्चे आध्यात्मिक आदर्श इस्राएल का हिस्सा नहीं हैं।

यहाँ एक बात है जिसे स्वीकार करना हम जैसे लोगों के लिए बहुत मुश्किल है जो पारंपरिक चर्च में पले–बढ़े हैं: ईसाई होने के नाते हम आध्यात्मिक इस्राएली बन गए हैं। जैसा कि संत पौलुस कहते हैं, सच्चे यहूदी। यह किसी तरह से शास्त्र से नहीं लिया गया है, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा संत पौलुस कहते हैं। हम स्वर्गीय, वास्तविक, सच्चे, आदर्श इस्राएल का हिस्सा हैं। कोषेर खाने की चर्चा के लिए यह एक महत्वपूर्ण तत्व है। क्योंकि यह कहता है कि चाहे हम शारीरिक यहूदी या शारीरिक रूप से गैर–यहूदी पैदा हुए हों, एक बार जब हम मसीह पर भरोसा करते हैं तो हम सभी एक नए मनुष्य बन जाते हैं; और हम आध्यात्मिक सच्चे इस्राएल नामक इकाई का हिस्सा बन जाते हैं।

इसलिए, ऐसा नहीं हो सकता कि आस्तिक यहूदियों के लिए आस्तिक गैर–यहूदियों से अलग नियम हों। ऐसा नहीं हो सकता कि आस्तिक यहूदी कोषेर रखने के लिए बाध्य हों, लेकिन आस्तिक गैर–यहूदी ऐसा न करें। जो एक के लिए ऐसा है, वह दूसरे के लिए भी ऐसा ही होना चाहिए।

आइये अब रोमियों 11 पढ़ें।

रोमियों 11:13–26 पढ़ें

ठीक है संत पौलुस कहते हैं कि हम गैर–यहूदी इस्राएल में कलम लगाए गए हैं, आध्यात्मिक इस्राएल जैतून का पेड़ जो ईश्वर के आदर्श इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है। वे भौतिक इस्राएली जिन्होंने ईश्वर पर भरोसा नहीं किया, इस बात पर भरोसा नहीं किया कि यीशु उनके पुत्र हैं जिन्हें हमें छुड़ाने के लिए भेजा गया

था, वे जैतून के पेड़ से टूटी हुई शाखाएँ थे। सच्चे आध्यात्मिक इस्राएल से टूटी हुई, भौतिक इस्राएल से **नहीं**। यहूदी जो आज तक यह नहीं मानते कि यीशु मसीहा हैं, वे जीवित हैं और स्वस्थ हैं और अभी भी यहूदी हैं, अभी भी भौतिक इस्राएल हैं। संत पौलुस जैतून के पेड़ का उपयोग आध्यात्मिक वास्तविकता के लिए एक मानक रूपक के रूप में कर रहा हैः आध्यात्मिक इस्राएल। जैतून का पेड़ गैर–यहूदी पेड़ नहीं है, यह एक इस्राएली पेड़ है। इसलिए, जैसा कि संत पौलुस कहते हैं, हमें इस बात पर घमंड नहीं करना चाहिए कि हम उस आध्यात्मिक जैतून के पेड़ में कलम लगाए गए हैं और न ही यह कल्पना करनी चाहिए कि हम जितना जानते हैं, उससे ज़्यादा जानते हैं, क्योंकि परमेश्वर के पास इस तरह से काम करने का एक कारण था और कारण क्या है? जैसा कि पद 26 में कहा गया है, **"ताकि सारा इस्राएल बच जाए''**। गैर–यहूदियों के बचने का एक कारण यह भी है कि भौतिक इस्राएल को बचाया जा सके। संत पौलुस निश्चित रूप से सही है। हम गैर–यहूदियों के पास विनम्र होने का हर कारण है और गर्व करने का कोई कारण नहीं है।

इसलिए हम इस तथ्य से बच नहीं सकते कि आप, मैं, सभी विश्वासी इस्राएल से जुड़े हुए हैं... आध्यात्मिक इस्राएल। क्या आप इस्राएल से जुड़ना नहीं चाहते? बहुत बुरा हुआ। आप उसी क्षण इस्राएल से जुड़ गए जब आप यहूदी मसीहा को स्वीकार किया। कोई **गैर–यहूदी** मसीहा नहीं है, और कभी नहीं होगा। ओह, निकट भविष्य में एक नकली मसीहा होने वाला है... वह गैर–यहूदी हो सकता है (लेकिन वह यहूदी भी हो सकता है) और वह मसीहा होने का दावा करेगा हम उसे एंटी–क्राइस्ट कहते हैं।

अतः इस संदर्भ को अन्यजाति और यहूदी विश्वासियों के रूप में हमारी वर्तमान स्थिति के रूप में लेते हुए (कि हम आत्मिक इस्राएली हैं, जो अपने यहूदी मसीहा में विश्वास के द्वारा इस स्थिति में आये हैं)... आइये आगे बढ़े और देखें कि यीशु ने स्वयं खाने के विषय में, तथा शुद्ध और अशुद्ध क्या है, के बारे में क्या कहा था।

अपनी बाइबल खोलकर मरकुस पढ़िए। मैं मरकुस 7:14 से शुरू करके पढ़ने जा रहा हूँ।

मरकुस 7:14 तब यीशु ने लोगों को फिर अपने पास बुलाकर कहा, "हे सब के सब मेरी सुनो, और इसे समझो। 15 ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य के बाहर से उसके भीतर जाकर उसे अशुद्ध कर सके, परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वही उसे अशुद्ध करती हैं!" 16 चेलों ने उस से इस दृ ष्टान्त के विषय में पूछा। 18 उस ने उनको उत्तर दिया, कि तो तुम भी नासमझ हो? क्या तुम नहीं देखते कि कोई वस्तु जो बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? 19 क्योंकि वह उसके 17 जब वह लोगों को छोड़कर घर में आया, तो उसके पिता ने कहा, ''मन में नहीं परन्तु पेट में जाती है, और संडास में निकल जाती है।" (इस प्रकार उसने सभी खाद्य पदार्थों को धार्मिक दृष्टि से शुद्ध घोषित किया।) 20 उसने आगे कहा, "जो कुछ मनुष्य के भीतर से निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है। 21 क्योंकि मनुष्य के भीतर से, अर्थात् उसके हृदय से, दुष्ट विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, व्यभिचार, 22 लोभ,

द्वेष, छल, अभद्रता, ईर्ष्या, निन्दा, अहंकार, मूर्खता 23 ये सब दुष्टताएँ भीतर से निकलती हैं, और मनुष्य को अशुद्ध बनाती हैं।"

अब, बिना किसी संदेह के, एक सामान्य पढ़ने से यह बिल्कुल वैसा ही लगता है जैसा कि हमें चर्च के शिक्षकों और पादरियों द्वारा बचपन से ही बताया जाता रहा है, कि यीशु कहते हैं कि अब कोई साफ और अशुद्ध भोजन नहीं है (या इस मामले में कुछ और); कि कोषेर भोजन समाप्त हो गया है। खैर, ऐसा तब होता है जब चीजों को सदर्भ से बाहर ले जाया जाता है, और जब बाइबल अनुवादक संपादकीय बनाते हैं। पद 19 में, अधिकांश बाइबलें "और इस प्रकार उसने सभी खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित किया" शब्दों के चारों ओर एक कोष्ठक लगा देंगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे शब्द मूल शास्त्र में मौजूद नहीं हैं। उन्हें धर्मशास्त्रियों द्वारा मध्यकालीन समय में एक संपादकीय टिप्पणी के रूप में जोड़ा गया था। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास किंग याकूब वर्जन है तो आपको वे शब्द नहीं मिलेंगे। वे शब्द एक धारणा और एक फुटनोट से अधिक कुछ नहीं हैं जो बाइबल अनुवादकों ने शास्त्र में लिखे हैं। वे गलत थे; और यह केवल यहूदी चीजों के बारे में उनकी अज्ञानता या तिरस्कार को दर्शाता है। इसके बजाय यीशु केवल इतना कहते हैं कि भोजन पच जाता है और फिर बाहर निकल जाता है। मानव मल (जैसे कि फरीसी यह नहीं जानते थे)। इसके अलावा, जैसा कि पद 17 से स्पष्ट है, यीशु ने इसे एक दृष्टांत के रूप में कहा, न कि शाब्दिक रूप में। दूसरे शब्दों में, यीशु एक पैटर्न को प्रदर्शित करने और एक बिंदु बनाने के लिए रूपक और दृष्टांत का उपयोग कर रहे थे (यह एक दृष्टात की परिभाषा है)। वह भोजन के संबंध में कोई अन्य निर्णय नहीं देता है।

दृष्टांत कैसे काम करते हैं, इसके उदाहरण के रूप में हम सभी इस दृष्टांत से परिचित हैं कि बीज कठोर भूमि, उपजाऊ भूमि और पथरीली भूमि पर बिखरे हुए हैं। और इस बारे में कि कैसे कभी–कभी हमें गेहूँ के साथ–साथ खरपतवार (खरपतवार) को भी उगने देना चाहिए, अन्यथा यदि हम खरपतवार को उखाड़ दें तो उनकी जड़ें गेहूँ में उलझ सकती हैं और यह गेहूँ को नुकसान पहुँचा सकती हैं। अब क्या कोई ईमानदारी से सोचता है कि उस दृष्टांत में यीशु कृषि पर एक पाठ दे रहे थे? क्या यीशु एक कृषि विशेषज्ञ बनकर अच्छी फसल उगाने का सबसे अच्छा तरीका समझा रहे थे? बिलकुल नहीं। वह गेहूँ और खरपतवार और विभिन्न प्रकार की मिट्टी का उपयोग इस बात के उदाहरण के रूप में कर रहे थे कि दुनिया में विभिन्न प्रकार के लोग सुसमाचार की खुशखबरी कैसे प्राप्त करते हैं, और फिर उसके बाद कुछ लोगों के साथ क्या होता है। वे इसे स्वीकार करते हैं।

यहाँ मरकुस में भी यही बात है, जैसा कि यीशु के सभी दृष्टांतों में है। वह किसी भी चीज को खत्म नहीं कर रहा था, और निश्चित रूप से शुद्ध और अशुद्ध की अवधारणा को खत्म नहीं कर रहा था।

तो, अपनी बाइबल को दोबारा देखें, लेकिन इस बार मरकुस अध्याय 7 की आयत 1 तक।

मरकुस 7:1 फरीसी और कुछ तोरह शिक्षक जो यरूशलेम से आए थे, यीशु के साथ इकट्ठे हुए 2 और देखा कि उसके कुछ शिष्य अशुद्ध हाथों से अर्थात् बिना हाथ धो के भोजन कर रहे थे। 3 (क्योंकि परशुम और वास्तव में सभी यहूदी, पुरनियों की परंपरा का पालन करते हुए, जब तक वे अपने हाथों को औपचारिक रूप से धो नहीं लेते, तब तक भोजन नहीं करते। 4 इसके अलावा, जब वे बाजार से आते हैं, तब तक वे अपने हाथों को कलाई तक धोए बिना भोजन नहीं करते, और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कि कप, बर्तन और कांस्य के बर्तन धोना।) 5 फरीसी और तोरह के शिक्षकों ने उससे पूछा, "तुम्हारे शिष्य पुरखों की रीति के अनुसार क्यों नहीं रहते, बल्कि अशुद्ध हाथों से खाते हैं?" 6 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में जो भविष्यवाणी की थी, वह सही थी जैसा लिखा है, 'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है। 7 उनका मेरे प्रति पूजन व्यर्थ है, क्योंकि वे मनुष्य के बनाए हुए नियमों को ऐसे सिखाते हैं मानो वे सिद्धांत हों।" 8 "तुम परमेश्वर की आज्ञा से विमुख होकर मनुष्यों की रीति पर चलते हो। 9 वास्तव में," उसने उनसे कहा, "तुमने अपनी रीति को बनाए रखने के लिए परमेश्वर की आज्ञा से विमुख होने का एक बढ़िया तरीका अपनाया है। 10 क्योंकि मूसा ने कहा, 'अपने पिता और अपनी माता का आदर करना,' और 'जो कोई अपने पिता या माता को श्राप दे, उसे अवश्य मार डाला जाना चाहिए।' 11 परन्तु तुम कहते हो, 'यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, 'मैंने कुर्बान के रूप में वचन दिया है' (अर्थात् परमेश्वर को भेंट के रूप में) 'जो मैं तुम्हारी सहायता के लिए कर सकता था',' 12 तो तुम उसे उसके पिता या माता के लिए कुछ भी करने नहीं देते। 13 इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं के द्वारा जो तुम ने अपने पास रखी हैं, परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर देते हो। और ऐसे ही अन्य काम भी करते हो।'

और, फिर, निस्संदेह, पद 14 की शुरुआत इस प्रकार होती है, "मेरी बात सुनो, जो कुछ तुम्हारे अन्दर जाता है वह तुम्हें अशुद्ध नहीं करता।

यहाँ हम पाते हैं कि यीशु की पूरी बातचीत का स्वच्छ और अशुद्ध भोजन से कोई लेना–देना नहीं था। बल्कि यह पारंपरिक शुद्धता कानूनों की विस्तृत सूची से संबंधित है, इस मामले में यह अनुष्ठानिक हाथ धोने से संबंधित है, जैसा कि उन्होंने गुस्से में बताया यह शास्त्र में भी नहीं है। यह एक मानव निर्मित परंपरा है। यहूदी परंपरा के अनुसार यदि कोई इब्रानी व्यक्ति खाने से पहले हाथ धोने की रस्म से नहीं गुजरता है तो वह अपने अन्यथा स्वच्छ कोषेर भोजन को अशुद्ध कर देता है उसका पूरी तरह से स्वीकार्य भोजन अशुद्ध हो जाता है। इस पर यीशु कहते हैं "बकवास"। इसलिए हम कोषेर खाने को खत्म करने के उदाहरण के रूप में गलत तरीके से दी गई एक और कहानी को खत्म कर सकते हैं, वास्तव में, कोषेर भोजन यहाँ चर्चा का विषय ही नहीं है, यह हाथ धोने और बुजुर्गों की अन्य अनुष्ठानिक परंपराओं की बात है जिसे यीशु ने खारिज कर दिया है।

अब, हममें से जो लोग आम तौर पर कोषेर खाने की वकालत करते हैं, वे विश्वासियों को इसका पालन करना चाहिए, शायद आप अभी बहुत अच्छा महसूस कर रहे होंगे। और, जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, मुझे संदेह है कि आप ठीक नहीं हैं। अच्छा, अगर यह इतना आसान होता।

मैं आपसे वादा करता हूँ कि हम इस विषय को यहीं समाप्त नहीं करेंगे, लेकिन मुझे आज रात के लिए इसे समाप्त करना होगा। मैं इसे समाप्त करना चाहूँगा। इस विचार के साथः परमेश्वर ने संपूर्ण शुद्ध और अशुद्ध पैटर्न का उपयोग इसलिए किया क्योंकि यह एक स्थापित ईश्वर–पैटर्न का अनुसरण करता है और यह इस दुनिया की चीज़ों को विभाजित करने, चुनने और अलग करने की प्रभु की शासकीय गतिशीलता का सबसे बड़ा प्रदर्शन है। लैव्यव्यवस्था 11:47 में प्रभु कहते हैं कि शुद्ध और अशुद्ध जानवरों पर उनके विस्तृत नियमों का कारण "शुद्ध और अशुद्ध के बीच अंतर करना" है। अशुद्ध और शुद्ध क्या है, इसकी परिभाषा करने से, उनके लोग अंतर जान पाएँगे और अशुद्ध से बचेंगे, उन्हें अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं है। प्रभु सब कुछ अलग करने के बारे में है। शैतान सब कुछ एक ढेर में वापस डालने और भेदभाव को खत्म करने के बारे में है। प्रभु सही और गलत, अच्छा और बुरा, पवित्र और अपवित्र, विषमलैंगिक और समलैंगिक, बचाए गए और बचाए नहीं गए, और पुरुष और महिला के बीच अंतर करने के बारे में है। प्रभु ने विशिष्ट भाषाओं वाले राष्ट्रों की स्थापना की और उन्होंने उन्हें सीमाओं और सीमाओं के साथ विभाजित और अलग किया ताकि वे उनका उपयोग कर सकें और उनके अनुसार उनका न्याय कर सकें।

शैतान का आशय सभी अलगावों और भेदभावों को मिटाना है, सही और गलत सापेक्ष हैं। अच्छाई और बुराई समय के साथ विकसित होती हैः किसी को भी ईश्वर द्वारा नहीं चुना जाता, सभी एक समान हैं। सभी कामुकता ठीक है, लिंगों के बीच कोई अंतर नहीं है और प्रत्येक लिंग की भूमिकाएँ और कर्तव्य अलग–अलग नहीं होने चाहिए। राष्ट्रों के बीच की सीमाएँ मिट जानी चाहिए और सभी लोग एक हो जाने चाहिए। परमेश्वर कहता है कि उसके लोगों को पवित्र होना चाहिए और इसलिए उन्हें उन चीज़ों से दूर रहना चाहिए जिन्हें उसने अशुद्ध घोषित किया है। शैतान कहता है कि पवित्र जैसी कोई चीज़ नहीं है और निश्चित रूप से अशुद्ध जैसी कोई चीज़ नहीं है। हर चीज़ और हर कोई बराबर और एक जैसा है, कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

हमें अपने भेदों को निर्धारित करने में बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि हमें उन्हें पवित्र शास्त्र से प्राप्त करना चाहिए, न कि उन्हें स्वयं बनाना चाहिए। जब हम अपने भेदों को चुनते हैं, तो हमें कट्टरता, नस्लीय और जातीय उत्पीड़न, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यबहार और सभी प्रकार के बदसूरत परिणाम मिलते हैं। दुनिया बेबेल के टॉवर को फिर से एक साथ रखने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। हमें हमारी सरकार और हमारे समाचार स्रोतों से, और अब चर्च और आराधनालय प्राधिकरण के भीतर भी कई लोगों से कहा जाता है कि परमेश्वर का इरादा है कि पृथ्वी पर सभी भेद मिटा दिए जाएँ, क्योंकि यही सच्चा प्यार है।

यह झूठ है। यह भी सच नहीं है कि अशुद्धता समाप्त हो गई है। हम अगले सप्ताह इस चुनौतीपूर्ण लेकिन महत्वपूर्ण विषय पर खोज जारी रखेंगे।